सागर में गागर

nbt.india
एकः सूते सकलम्

गोविंद शर्मा

चित्रांकन
अबीरा बंदोपाध्याय

6 से 8 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रही है।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

ISBN 978-81-237-9135-7

पहला ईप्रिट संस्करण : 2020
© गोविंद शर्मा
Sagar Main Gagar *(Hindi Original)*

₹ 30.00

ईप्रिट द्ववारा ऑर्नट टेक्नो सविसेज प्रा.लि.
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज़-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

सागर में गागर

गोविंद शर्मा

चित्रांकन
अबीरा बंदोपाध्याय

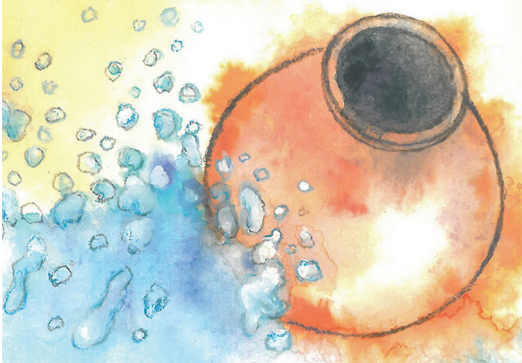

nbt.india
एकः सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

nbt.india
एकः सूते सकलम्

उसे छोटी नदी कहो या बड़ा नाला। उसका पानी आस-पास के खेतों की सिंचाई के काम आता था। लोग उस पानी को पीते भी थे। एक दिन एक लड़का तांबे की गागर लेकर आया। पहले उसने गागर को साफ किया। फिर उसमें पानी भरने लगा तो वह हाथ से छूट गई।

उसी समय पीछे से पानी का बहाव तेज हो गया। लड़का गागर को पकड़ न सका और वह आगे बह गई। उस छोटी नदी से वह गागर एक दूसरी धारा में चली गई। वह धारा उसे समुद्र में ले गई। गागर की शुरू हो गई सागर यात्रा। सागर में यूँ तैरते हुए जाना उसका पहला अनुभव था। गागर अब तक घर में रही थी। अब उसे यहाँ घर जैसा कोई प्राणी नहीं दिखाई दिया।

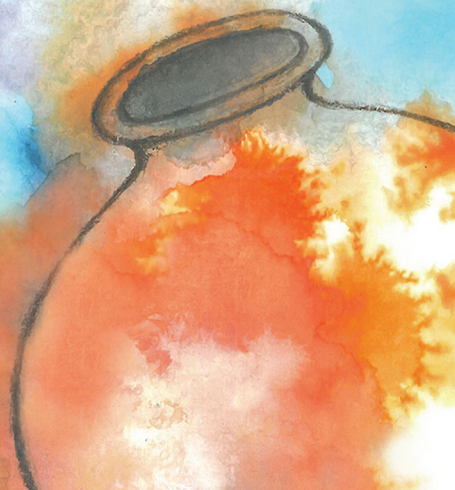

nbt.india
एकः सूते सकलम्

छोटी-बड़ी मछलियाँ थीं। उसे ये सब अजीब लग रहे थे। एक बड़ी मछली तो उसके काफी नजदीक आ गई। उसने उसे कोई गोल-मटोल जीव समझकर खाने की सोची। बड़ी मछली ने मुँह खोला और उसे खाने के लिए अपने चौड़े मुँह से पकड़ना चाहा। गागर फिसल कर छूट गई। गोल घूमती दूर चली गई। बड़ी मछली गागर की कठोरता और गोल घूमना देखकर डर गई। उसे छोड़कर कहीं दूर चली गई।

nbt.india
एकः सते सकलम्

कुछ और बड़ी मछलियाँ भी वहाँ आ गईं। पहले तो वे भी उसे देखकर डरीं। पर जब उन्होंने देखा कि यह गोल-मटोल जीव उन्हें पकड़ने की कोशिश नहीं कर रहा है तो उसके पास आ गईं। एक बड़ी मछली ने उसे सूँघ भी लिया। उसने ऐसी गंध पहले कभी नहीं सूँघी थी। बड़ी मछलियाँ उससे कुछ दूर रहकर उसके साथ-साथ चलने लगीं। गागर थी कि एक ही दिशा में नहीं जा रही थी। जिधर भी हवा के झोंके ले जाते, उधर ही चली जाती।

bt.india
एकः सूते सकलम्

अचानक वहाँ छोटी-छोटी मछलियाँ आ गईं। उन्हें कोई डर नहीं लग रहा था। उन्होंने सोचा, यह भी उनकी तरह एक जीव है। छोटी मछलियाँ उसके चारों तरफ खेलती रहतीं। एक बड़ी मछली ने जब इन छोटी मछलियों को देखा तो उसके मुँह में पानी आ गया। वह उन्हें खाने के लिए दौड़ी आई। छोटी मछलियाँ इधर-उधर भाग गईं। पर दो छोटी मछलियाँ फँस गईं। बड़ी मछली उन्हें पकड़ने के लिए लपकी तो वे दोनों गागर की ओट में हो गईं। बड़ी मछली गागर की दूसरी तरफ गई तो छोटी इस तरफ आ गईं। इस पकड़म-पकड़ाई में गागर एक तरफ झुक गई। यह झुकाव छोटी मछलियों की तरफ था। दोनों छोटी मछलियाँ एक साथ उछल कर गागर के भीतर चली गईं।

nbc india
एकः सूते सकलम्

भीतर थोड़ा-सा पानी था। छोटी मछलियाँ उसमें खेलने लगीं। बड़ी मछली को उनकी आवाज सुनाई दी तो वह हैरान रह गई। अरे, यह गोल-मटोल जीव नहीं, अजीब शक्ल की कोई मछली है। यह सोचकर वह डरी और दूर चली गई। दोनों छोटी मछलियों की जान बच गई। अब तो छोटी मछलियों का यह खेल बन गया। जब भी उन्हें फुरसत होती, गागर में खेलने आ जातीं। मछलियाँ थोड़ी बड़ी होते ही वहाँ से चली जातीं, ताकि छोटी मछलियाँ वहाँ आकर खेल सकें, हमला करने वाली मछलियों से बच सकें।

ncert.india
एकः सूते सकलम्

अचानक तेज गरमी हो गई। गागर को तो तैरने में खूब मजा आ रहा था, पर उसके भीतर का पानी बिलकुल सूख गया। एक दिन जोरों से हवा चली। गागर सागर में घूमती बहुत दूर चली गई। हवा कुछ धीमे हुई तो गागर ने देखा एक चिड़िया उसके आस-पास मँडरा रही है। लगता है वह तेज हवा के कारण रास्ता भटक गई है।

nbt.media
एकः सूते सकलम्

उसे अब किनारा नहीं दिख रहा है। वह सूखी धरती पर पहुँचने के लिए बेचैन है। पर उसे धरती नजर नहीं आ रही है। इसलिए वह इधर-उधर मँडरा रही है। लगा, चिड़िया उड़ते-उड़ते थक गई है। वह कहीं बैठना चाहती है। पर कहाँ बैठे। पहले तो चिड़िया झिझकी। फिर हिम्मत करके गागर के किनारे पर बैठ गई। गागर एक तरफ थोड़ी-सी झुकी, फिर सीधी हो गई। क्योंकि चिड़िया का ज्यादा वजन नहीं था।

अब तो चिड़िया का वह ठिकाना बन गया। चिड़िया ने पानी में तैरते पत्ते एक-एक कर उठाए। उन्हें हवा में सुखाया और गागर में डाल दिया। कुछ ही दिन में गागर में घोंसला बन गया। गागर को भी वह अच्छा लगा। चिड़िया किनारे की खोज में इधर-उधर उड़ती रहती, जब थक जाती तो गागर में बने घोंसले में आराम करने आ जाती। चिड़िया के वहाँ आने से छोटी मछलियों से उनका खेल का मैदान छिन गया। पर छोटी मछलियाँ नाराज नहीं हुईं। क्योंकि वे समझ गई थीं कि चिड़िया को बैठने के लिए सूखी जमीन चाहिए। मछलियाँ तो पानी में ही रहती हैं। गागर के भीतर न सही, गागर के बाहर तो बहुत पानी है। हम वहाँ खेल सकती हैं। छोटी मछलियों ने खुशी-खुशी गागर का मैदान चिड़िया के लिए छोड़ दिया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एक: सते सकलम

एक दिन तो वहाँ नया काम हो गया। चिड़िया ने गागर के भीतर बने घोंसले में अंडा दे दिया। अपने अंडे की रक्षा करने चिड़िया अब ज्यादा समय घोंसले में रहने लगी। कुछ ही दिन में अंडे में से चिड़िया का बच्चा निकल आया। अब तो चिड़िया की बेचैनी बढ़ गई। अब उसे अपने लिए ही नहीं, बच्चे के लिए भी सूखी धरती चाहिए। बच्चे को उड़ने के लिए धरती-आकाश चाहिए।

एक दिन फिर तूफान आया। हवा तेज-तेज चलने लगी। हवा के साथ-साथ गागर को भी तेज रफ्तार से चलना पड़ा। काफी देर बाद तेज हवा मंद हुई तो चिड़िया गागर से बाहर आई। बाहर आते ही उसने जो देखा, मारे खुशी के वह चीं-चीं करने लगी। दूर ही सही, उसे धरती दिखाई दे गई। धरती पर उगे पेड़ दिख गए। मंद हवा के साथ गागर चल रही थी। उधर ही, जिधर धरती थी, पेड़ थे।

हवा के साथ चलती गागर अचानक एक जगह फँस गई। यह पेड़ था। तेज हवा के कारण उखड़ा पेड़। पेड़ सागर के पानी में आ गिरा था। उसका एक सिरा अब भी धरती पर था। चिड़िया पहले पानी में तैरते कीड़े चुग्गे के रूप में अपने बच्चे को खिलाती थी। अब धरती से वनस्पति लाकर खिलाने लगी। अब तूफान-हवा बंद थे। चिड़िया का बच्चा भी अब थोड़ा खेलने, फुदकने लगा था, पर वह गागर से बाहर नहीं आ सका था।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

एक दिन खेलते-कूदते दो बच्चे वहाँ आ गए। एक को पेड़ में अटकी वह गागर दिख गई। उसने अपने साथी से कहा, “देख-देख वहाँ क्या है?” दूसरा बच्चा बड़ा था। वह बोला—“अरे वाह, तांबे का घड़ा? इसमें खजाना हो सकता है...।” “खजाना क्या होता है?” “रुपये-पैसे...” कहते हुए वह उस टूटे पेड़ पर चढ़कर गागर की तरफ जाने लगा।

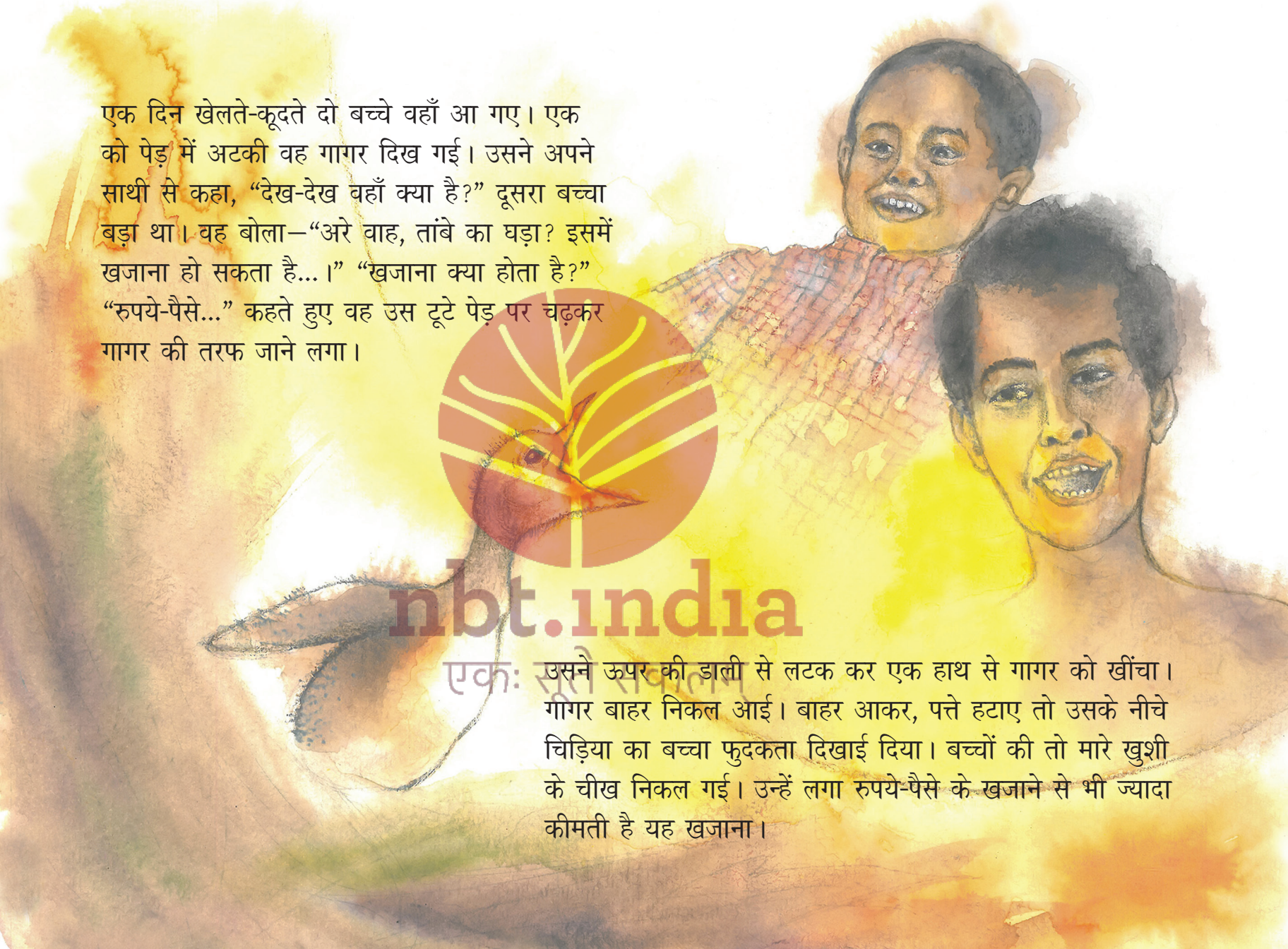

nbt.india

उसने ऊपर की डाली से लटक कर एक हाथ से गागर को खींचा। गागर बाहर निकल आई। बाहर आकर, पत्ते हटाए तो उसके नीचे चिड़िया का बच्चा फुदकता दिखाई दिया। बच्चों की तो मारे खुशी के चीख निकल गई। उन्हें लगा रुपये-पैसे के खजाने से भी ज्यादा कीमती है यह खजाना।

दोनों ने चिड़िया के बच्चे को बचाने की सोच ली। दोनों बच्चों ने गागर को उठाया और एक बड़े पेड़ के नीचे ले गए। एक बच्चा उस पेड़ की डाली पर चढ़ गया। दूसरे ने उसे बच्चे सहित घोंसला पकड़ा दिया।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

ऊपर चढ़े बच्चे ने घोंसले को पेड़ की एक सुरक्षित डाली पर रख दिया और नीचे उतर आया। बच्चे की माँ चिड़िया भी काफी देर से वहीं मँडरा रही थी। वह तुरंत घोंसले के पास पहुँच गई और बच्चे को चुग्गा देने लगी। अब वह खुश थी, उसका बच्चा सुरक्षित ठिकाने पर पहुँच गया, उसका घोंसला भी सही-सलामत पहुँच गया। वे बच्चे गागर को भूले नहीं। उसे मिट्टी-पानी से अच्छी तरह से साफ किया और अपने घर ले गए।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

उसे घर के एक कोने में रख दिया। पहले गागर भीतर से खाली थी, उसके चारों तरफ पानी ही पानी था। अब उसके भीतर पानी ही पानी था। बाहर एकदम सूखा। पर वह खुश थी। सुबह-शाम उसे नहलाया जाता, यानी उसे माँज कर पानी भरा जाता। हाँ, सागर में गागर यात्रा ही यात्रा करती थी, यहाँ एक जगह बैठी रहती है। वहाँ उस जैसा कोई नहीं था, यहाँ उससे कुछ दूर उस जैसी ही मिट्टी से बनी गागर थी। गागर इसलिए भी खुश थी कि पहले उसने छोटी मछलियों को बचाया, फिर चिड़िया और उसके अंडे-बच्चे को बचाया। अब घर के लोगों को साफ पानी पिला रही है। सबका भला करने वाला खुश तो रहता ही है।

nbt.india
एकः सूते सकलम्

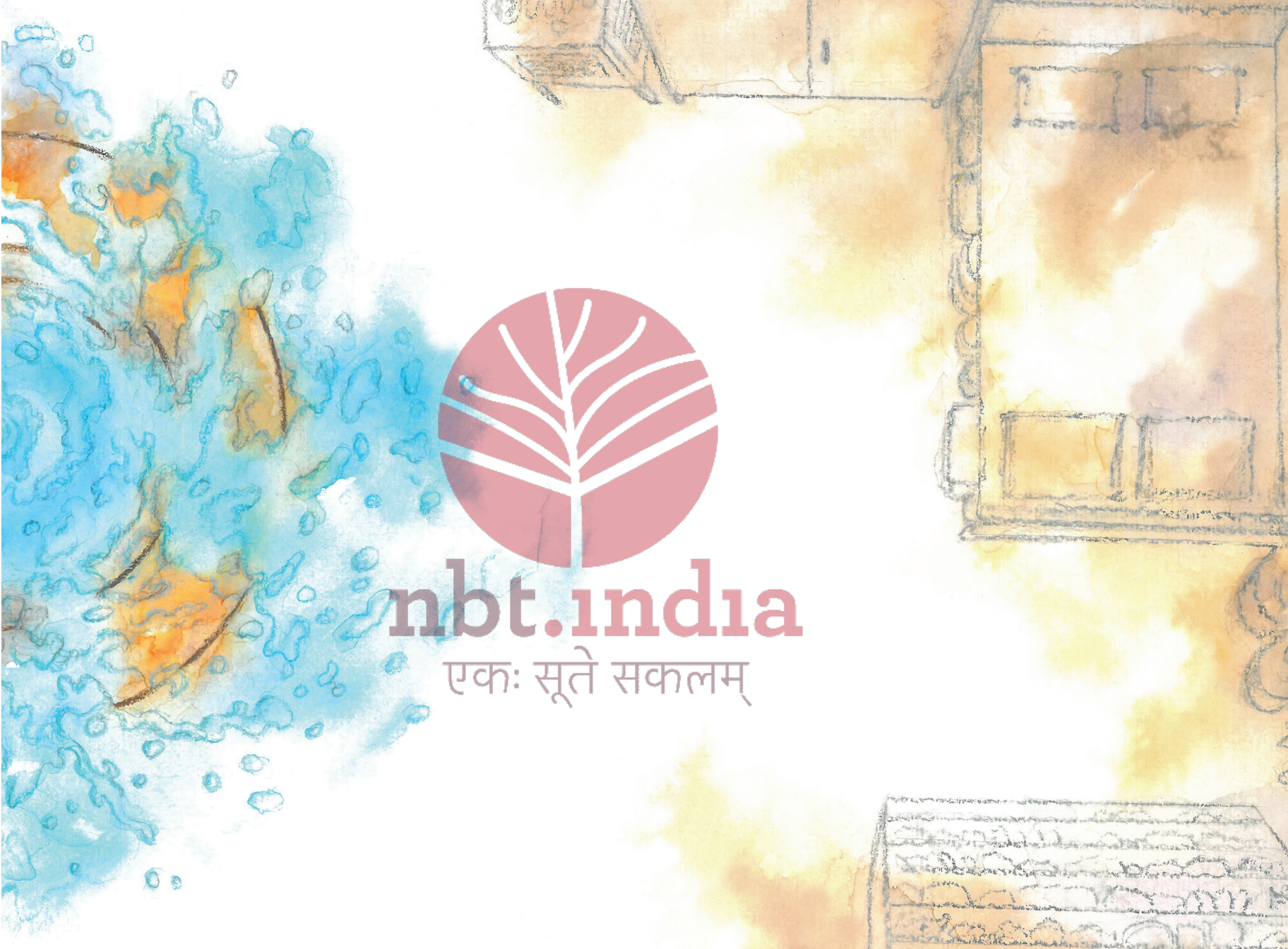
nbt.india
एकः सूते सकलम्

nbt.india
एकः सूते सकलम्

₹ 35.00
ISBN 812379015-5
9 788123 790152
19201690

nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

nbt.india
एकः सूते सकलम्